तेंदुए की गिनती लापता मानक संख्या के साथ

-लेखक - संजय गुब्बी (संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-III (पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी) से संबंधित है।

द हिन्दू

02 जनवरी, 2021

चुनिंदा साइटों और संरक्षित क्षेत्रों में बाघों की संख्या का आकलन करना एक बेहतर अवलोकन सुनिश्चित करेंगी।

हाल ही में भारत में तेंदुओं की स्थिति रिपोर्ट के अनुसार - भारत में तेंदुए की आबादी 4 साल [2014 के बाद से] में 60% बढ़ गयी है। हालाँकि जितनी चर्चाएं बाघों की संख्या को लेकर देश भर में होती रहती है उतनी चर्चाएं शायद ही इस प्रजाति के बारे में होता है। भारत में 21 राज्यों के भौगोलिक पैमाने पर एक इस मांसाहारी जीव की आबादी का अनुमान प्राप्त करना मुश्किल है और इसके लिए व्यापक प्रयास की आवश्यकता है।

क्या किये जाने की आवश्यकता है?

ज्यादातर प्रजातियों के संरक्षण का लक्ष्य, प्रजातियों की आबादी की रक्षा करना और इनकी संख्या बढ़ाने से जुड़ा होता है। इस दिशा में, उनकी वर्तमान संख्या की वैज्ञानिक निगरानी और वर्षों में संख्या में वृद्धि या कमी यह निर्धारित करेगी कि प्रजातियों को संरक्षित करने के लिए किए गए संरक्षण के प्रयास फल दे रहे हैं या नहीं। इसे प्राप्त करने के लिए, एक ठोस, प्रामाणिक बेंचमार्क की आवश्यकता है।

हालांकि, भारत में तेंदुओं की स्थिति, 2018 रिपोर्ट स्पष्ट रूप से उल्लेख करती है कि यह आंकड़ा 'न्यूनतम संख्या है', जिस तरह से इसे लॉन्च किया गया था, यह दर्शाया गया है कि देश में 12,852 तेंदुए हैं। अगर हम इन आंकड़ों पर ध्यान दें, तो मुझे लगता है कि यह संख्या कम से कम 40% कम है। मेरी (लेखक) राय में, भारत में 20,000 से अधिक तेंदुए हो सकते हैं।

बाधों के अनुमान के अनुसार

यह अध्ययन अधिकांशत: वनाच्छादित आवासों पर केंद्रित है, जहाँ बाघ पाए जाते हैं, क्योंकि यह अखिल भारतीय बाघ अनुमान का उप-उत्पाद था। इसलिए अन्य तेंदुआ निवास स्थान जैसे चट्टानी बहिर्वाह, छोटे सूखे जंगल, हिमालय में उच्च ऊंचाई वाले आवास, कृषि परिदृश्य (कॉफी, चाय, सुपारी, गन्ना बागान) जहां तेंदुए अच्छी संख्या में पाए जाते हैं, वहां सर्वेक्षण नहीं किए गये है। इसी तरह, पूर्वोत्तर भारत के अधिकांश क्षेत्रों को इस सर्वेक्षण से बाहर रखा गया था। इसलिए यह कहना गलत नहीं है कि स्वयं द्व ारा किया गया अध्ययन अखिल भारत सर्वेक्षण का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण कारक है जिसने भारत के तेंदुए की संख्या को वास्तविक तस्वीर से कम रखा है।

भारत जैसे बड़े राष्ट्र में बड़े पैमाने पर अध्ययन करने के लिए भारी संसाधनों और समय की आवश्यकता होती है। यदि इस अध्ययन में अन्य अनुसंधान संगठनों द्वारा तेंदुओं की आबादी का किया गया अध्ययन भी शामिल होता तो शायद तेंदुओं की संख्या और अधिक होती।

कर्नाटक में

तेंदुओं पर मेरा (लेखक) काम मेरे गृह राज्य कर्नाटक में केंद्रित है। इसलिए मैं इसे अखिल भारतीय तेंदुओं की संख्या पर समानताएं बनाने के लिए एक उदाहरण के रूप में उपयोग करूंगा। बीआरटी-एमएम हिल्स-कावेरी-बानेरघट्टा संरक्षित क्षेत्रों में हमारे कैमरा ट्रैपिंग अभ्यास ने 267 तेंदुए की आबादी का पता लगाया। यह संरक्षित क्षेत्र परिसर, 2,825 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में, संभवत: कर्नाटक में 6% से कम तेंदुओं के आवास का प्रतिनिधित्व करता है। देवनारायणदुर्ग आरक्षित वन और इसके आस-पास के क्षेत्रों जैसे छोटे, प्राकृतिक आवासों में भी 15 तेंदुओं की आबादी दिखाई दी। छोटे चट्टानी बहिर्वाह जैसे कि देवनारायदुर्ग में संभवत: तेंदुओं की संख्या अधिक हो सकती है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि इस तरह के आवासों को तब शामिल किया जाए है जब पूरे राष्ट्र में इनकी आबादी का आंकड़ा शामिल हो।

भ्रामक तस्वीर

ऐसा दावा किया गया है कि "तेंदुओं की संख्या में 60% की वृद्धि हुई है", हालाँकि इसकी बारीकी से जांच की जानी चाहिए। 2014 में, अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि 18 विभिन्न भारतीय राज्यों में 7,910 तेंदुआ आबादी का पता लगाया गया, जिसमें 92,164 वर्ग किलोमीटर को अध्ययन के दायरे में लाया गया था। 2018 में, अध्ययन का विस्तार 21 राज्यों में किया गया, जिसमें 121,337 वर्ग किलोमीटर को अध्ययन के दायरे में लाया गया, जो अध्ययन क्षेत्र के आकार में 25% की वृद्धि को दर्शाता है। यहां तक कि कैमरा ट्रैप स्थानों की संख्या में भी लगभग तीन गुना (9,735 से 26,838 कैमरा ट्रैपिंग स्थानों) की वृद्धि हुई है।

इसलिए, 2018 के परिणामों की तुलना 2014 से करना और यह कहना इसमें 60% की वृद्धि हुई है, काफी भ्रामक प्रतीत होती है। इसका सीधा सा मतलब है कि हमने अधिक क्षेत्र को कवर किया है और तेंदुओं की गणना करने के लिए और अधिक कैमरा ट्रैप लगाए हैं, जिसके परिणामस्वरूप तेंदुओं की संख्या अधिक प्राप्त हुई।

प्रमुख खतरे

कुल मिलाकर, हमें एक मानक संख्या की आवश्यकता है जिससे हम तेंदुओं की संख्या और इस प्रजाति पर संभावित खतरों का मूल्यांकन कर सकते हैं। सामान्य तौर पर, खनन और उत्खनन के कारण इसके निवास स्थान की हानि, इसका अवैध शिकार, वाहनों की टक्कर के कारण मृत्यु दर, मानव-तेंदुए संघर्ष में इसकी मृत्यु और जंगलों में लगाई गयी जाल में फंस कर इनकी मृत्यु देखने को मिलती रहती है। चुनिंदा साइटों और संरक्षित क्षेत्रों में बाधों की संख्या का आकलन करना एक बेहतर अवलोकन सुनिश्चित करेगी।

Committed To Excellence

भारत में 2018 में तेंदुओं की स्थिति' रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने 'भारत में 2018 में तेंदुओं की स्थिति' शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की।
- बाघों, एशियाई शेरों और अब तेंदुओं की संख्या में वृद्धि दर्शाती है कि किस तरह भारत अपने यहां पर्यावरण, पारिस्थितिकी और जैव विविधता की रक्षा कर रहा है।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष

- इसके मुताबिक भारत में तेंदुओं की संख्या 2018 में बढ़कर लगभग 12,852 से अधिक हो गई है।
- विदित हो कि भारत में तेंदुओं की संख्या वर्ष 2014 में करीब 8,000 थी।
- रिपोर्ट के मुताबिक भारत में सबसे अधिक 3,421 तेंदुए मध्य प्रदेश में पाए गए हैं।
- कर्नाटक में इनकी संख्या 1,783 और महाराष्ट्र में 1,690 है।
- पूर्वोत्तर के पहाड़ी क्षेत्र में सिर्फ 141 तेंदुए पाए गए।
- इसके अलावा, तेंदुओं की संख्या तमिलनाडु में 868, छत्तीसगढ़ में 852 और उत्तराखंड में 839 है।
- पश्चिमी घाट क्षेत्र, जिसमें कर्नाटक, तमिलनाडु, गोवा और केरल के क्षेत्र शामिल हैं, वहां 3,387 तेंदुए जबकि शिवालिक एवं गंगा के मैदानी इलाके जिसमें उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और बिहार के क्षेत्र आते हैं उनमें 1,253 तेंदुए पाए गए।
- रिपोर्ट के अनुसार, मानव- तेंदुओं के बीच 'गहन संघर्ष' ज्यादातर शिवालिक-तराई क्षेत्र और मध्य भारत के कुछ पहाड़ी क्षेत्रों में देखे गये हैं।
- उत्तराखंड राज्य वन विभाग के आंकड़ों के अनुसार, इस साल अगस्त तक कुल 75 तेंदुओं को मानव जीवन के लिए खतरनाक घोषित किया गया है (या आदमखोर घोषित किया गया है)। 2019 में 55 तेंदुओं को खतरनाक घोषित किया गया था।

गणना किन क्षेत्रों में की

- सर्वेक्षण को देश को चार क्षेत्रों- शिवालिक हिल्स तथा गंगेटिक प्लेन्स लैंडस्केप, सेंट्रल इंडियन लैंडस्केप तथा पूर्वी घाट, पश्चिमी घाट लैंडस्केप तथा नॉर्थ ईस्ट हिल्स और ब्रह्मपुत्र प्लेन लैंडस्केप में विभाजित करके किया गया था।
- गणना में हिमालय के ऊंचाई वाला क्षेत्र, शुष्क क्षेत्र से लेकर पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्रों को शामिल नहीं किया गया है।
- इन क्षेत्रों को शामिल नहीं करने की प्रमुख वजह यह है कि इन क्षेत्रों में तेंदुओं की संख्या बेहद कम होने के आसार हैं।
- तेंदुओं की संख्या की गणना न केवल टाइगर रेंज में की गई बल्कि गैर वन वाले क्षेत्र जैसे कॉफी, चाय के बागान और दूसरे भौगोलिक क्षेत्र में भी की गई है, जहां पर तेंदुए पाए जाने की संभावना होती है।
- 141 स्थानों पर फैले 26,838 स्थानों पर कैमरा ट्रैप लगाए गए थे, जिसके माध्यम से कुल 5,240 वयस्क तेंदुओं का फोटो कैप्चर किया गया है।

Committed To Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. हाल ही में जारी की गयी 'भारत में 2018 में तेंदुओं की स्थिति' रिपोर्ट के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-

1. भारत में सबसे अधिक तेंदुए मध्य प्रदेश और उसके बाद महाराष्ट्र में पाए गए हैं।
2. वर्ष 2014 में भारत में तेंदुओं की संख्या करीब 7,910 थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 2 **(b)** केवल 1

(c) 1 और 2 दोनों **(d)** न तो 1 न ही 2

Expected Questions (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements in the context of 'Status of Leopards in India 2018', report, released recently:-

1. Most leopards in India have been found in Madhya Pradesh and then Maharashtra.
2. In 2014, the number of leopards in India was around 7,910.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 2 **(b)** Only 1

(c) Both 1 and 2 **(d)** Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. भारत में 2018 में तेंदुओं की स्थिति' रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्षों पर प्रकाश डालें साथ ही बताएं कि भारत में तेंदुओं के संरक्षण और इनके कम होते आवास में वृद्धि लाने के लिए क्या अपेक्षित कदम उठाये जाने चाहिए?

(250 शब्द)

Q. Highlight the main findings of the 'Leopard Status in India' report in 2018, as well as what expected steps should be taken to increase the conservation of leopards and its decreasing habitat in India?

(250 Words)

Committed To Excellence

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।